❍ 20 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *अपकारी पर भी उपकार किया ?*

➢➢ *व्यर्थ बातें न सुनी और न सुनाई ?*

➢➢ *संगम युग के महत्व को जान परमात्म दुआों से झोली भरी ?*

➢➢ *आज्ञाकारी बन बाप और परिवार की दुआओं के पात्र बने ?*

———————————————————

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ जहाँ देखते हो, जिसको देखते हो चलते फिरते उसका आत्मिक स्वरूप ही दिखाई दे। *जैसे जब किसी के नैनों में खराबी होती है तो उसे एक समय में दो चीजे दिखाई पड़ती हैं। ऐसे यहाँ भी अगर दृष्टि पूर्ण नहीं बदली है तो देही और देह दो चीजें दिखाई देंगी।*

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं रूहानी सेवाधारी हूँ"*

〰✧ सदा अपने को रूहानी सेवाधारी समझते हो? उठते-बैठते चलते फिरते सेवाधारी को सदा सेवा का ही ख्याल रहता और यह सेवा ऐसी सहज है जो मन्सा, वाचा और कर्मणा किसी से भी कर सकते हो। अगर कोई बीमार भी है, बिस्तर पर भी है तो भी सेवा कर सकते हैं। अगर शरीर ठीक नहीं भी है तो बुद्धि तो ठीक है ना। मन्सा सेवा बुद्धि द्वारा ही होती है ऐसे सदा सेवा का उमंग उत्साह व सेवा की लगन रहती है? *क्योंकि जितनी सेवा करेंगे उतना यह प्रकृति भी आपकी जन्म-जन्म सेवा करती रहेगी। प्रकृति दासी बन जायेगी। अभी प्रकृति दु:ख का कारण बन जाती है फिर यही प्रकृति सेवाधारी बन जायेगी।*

〰✧ सेवा करना अर्थात् मेवा लेना। यह सेवा करना नहीं है लेकिन सर्व प्राप्ति करना है। अभी-अभी सेवा की अभी-अभी खुशियों का भण्डारा भरपूर हुआ। *एक आत्मा की भी सेवा करेंगे तो कितना दिन उसकी खुशी का प्रभाव रहता है क्योकि वह आत्मा जन्म-जन्म के लिए दु:ख से छूट गई। जन्म-जन्म का भविष्य बनाया तो आपको भी उसकी खुशी होगी। ऐसे सभी का अनेक जन्म सुधारने वाले, मास्टर भाग्य विधाता हो।* क्योकि उनका भाग्य बदलने के निमित बन जाते हो ना। गिरती कला के बदले चढ़ती कला का भाग्य हो जाता।

〰✧ सेवा करना अर्थात् खुशी का मेवा खाना, यह ताजा फल है। डॉक्टर भी कमजोर को कहते हैं ताजा फल खाओ। यहाँ ताजा फल खाओ तो आत्मा

शक्तिशाली बन जायेगी। *सदा सेवा की हिम्मत रखने वाले, विश्व परिवर्तन करने की हिम्मत रखने वाले, अपने को फर्स्ट लाने की हिम्मत रखने वाले, ऐसे सदा हिम्मत रख औरों को भी निर्बल से बलवान बनाओ।* बापदादा हिम्मत रखने वाले बच्चों को सदा मुबारक देते हैं।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *आपने मन को ऑर्डर किया सेकण्ड में अशरीरी हो जाओ, यह तो नहीं कहा सोचो - अशरीरी क्या है?* कब बनेंगे, कैसे बनेंगे? ऑर्डर तो नहीं माना ना! कन्ट्रोलिंग पॉवर तो नहीं हुई ना! अभी समय प्रमाण इसी प्रेक्टिस की आवश्यकता है।

〰✧ अगर कन्ट्रोलिंग पॉवर नहीं है तो कई परिस्थितियाँ हलचल में ले आ सकती है। इसलिए एक होली शब्द ही याद करो तो भी ठीक है। *होली - बीती सो बीती और हो ली बाप की बन गई।* और क्या बन गई? होली अर्थात पवित्र आत्मा बन गई।

〰✧ एक शब्द होली याद करो तो एक होली शब्द के तीन अर्थ यूज करो, वर्णन नहीं करो. हाँ होली माना बीती सी बीती। हाँ. बीती सो बीती है - ऐसे नहीं

सोचते रहो, वर्णन करते रहो, नहीं। *अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ। सोचा और हुआ।* ऐसे नहीं सोचा तो सोच में ही पडे रहो। नहीं। जो सोचा वह हो गया, बन गये, स्थित हो गये।

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ टीचर्स अर्थात् फ़रिश्ता। टीचर का काम है- पण्डा बन करके यात्रियों को ऊँची मंज़िल पर ले जाना। ऊँची मंज़िल पर कौन ले जा सकेगा? जो स्वयं फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट होगा। हल्का ही ऊँचा जा सकता है। भारी नीचे जायेगा। *टीचर का काम है ऊँची मंज़िल पर ले जाना, तो खुद क्या करेंगे? फ़रिश्ता होंगे ना? अगर फ़रिश्ते नही तो खुद भी नीचे रहेंगे और दूसरों को भी नीचे लायेंगे।* अपने को फ़रिश्ता अनुभव करती हो? बिल्कुल हल्का। देह का भी बोझ नहीं। *मिट्टी बोझ वाली होती है ना? देहभान भी मिट्टी है। जब इसका भान है तो भारी रहेंगे। इससे परे हल्का अर्थात् फ़रिश्त होगे।* तो देह के भान से भी हल्कापन। *देह के भान से परे तो और सभी बातों से स्वत ही परे हो जायेंगे।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⟡° ° ••☆••⟡° ° ••☆••⟡° ° ••☆••⟡° °

―――――――――――――――――――――

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- शांतिधाम जाकर सुखधाम में आयेंगे इस ख़ुशी में रहना"*

➳ _ ➳ *झील के किनारे बैठी मैं आत्मा प्यारे बाबा का आह्वान करती हूँ... प्यारे बाबा के आगमन से झील की लहरें ख़ुशी से उछल रही हैं... हवा और पानी साथ साथ खेल रहे हैं... पेड़ पौधे झुक झुककर सलाम कर रहे हैं...* मौसम की मस्ती से मेरे मन में भी उमंग उल्लास की लहरें दौड़ रही हैं... ऐसा लग रहा पूरी प्रकृति प्रेम के सागर की आने की ख़ुशी में प्रेम की कविताएं सुना रही हैं... इस दुख की दुनिया से निकाल सुख, शांति की दुनिया में ले जाने आए मेरे बाबा के सामने मैं आत्मा बैठ प्यार की बातें करती हूँ...

❉ *सुख-शांति के सागर मेरे प्यारे बाबा हथेली पर स्वर्ग की सौगात सजाकर कहते हैं:-* "मेरे लाडले बच्चे... मै विश्व का पिता आप बच्चों की झोली सदा के लिए सुख से भरने आया हूँ... अमन ही अमन हो ऐसी चैन की दुनिया बसाने आया हूँ... *सुख शांति भरपूर हो ऐसी मीठी सुखो की दुनिया बच्चों के लिए सौगात स्वरूप लाया हूँ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा खुशियों के सागर में झूमती लहराती हुई कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा आपके बिना किस कदर दुखमय जीवन को अपनी नियति समझ रही थी... आपने मीठे बाबा... मेरा दामन खुशियो से खिलाया है... *सुख शांति से भरे जीवन का अधिकारी बना सजाया है..."*

❉ *प्यारे बाबा परमात्म माडट और परमात्म दिव्य लाडट से मझे भरपर करते

हुए कहते है:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... इस घोर पाप की दुनिया से ईश्वर पिता के सिवाय कोई निकाल ही न सके... *सुख भरा चैन सिर्फ पिता ही जीवन में ला सके...* ऐसे मीठे बाबा को हर पल यादो में सजाओ... जो परमधाम से उतर आये और सुख शांति के सौगातों से लबालब कर जाय..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा शांतिधाम और सुखधाम की स्मृतियों को मन में बसाकर कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... आप महा पिता मेरे लिए कितनी दूर से आते हो... *सुनहरे सुखो से और शांतिमय जीवन से मेरी सदा के लिए दुनिया सजाते हो...* अपनी मीठी यादो से मुझे आप समान सुंदर बनाते हो... जिंदगी को महकाते हो..."

❇ *मेरे बाबा पाप की दुनिया से मुझे निकाल चैन की दुनिया में ले जाने दूर देश से आकर कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... अपने खिलते हुए खुशबूदार फूलो को इस कदर विकारो रुपी काँटों में झुलसता तो मै पिता देख ही न सकूं... और बच्चों को मुस्कराहटों से सजाने महकाने धरती पर आऊं... *बच्चे सुख शांति के जीवन में चैन से रहे तो मै पिता सदा का आराम पाऊँ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अपने घर को, स्वर्णिम दुनिया के सुखों को याद कर आनंदोल्लास में डूबकर कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा पाप की दुनिया में गहरे धस गई थी... *आपसे मेरी दारुण सी दशा देखी न गई... आप दौड़े से आये और मेरा जीवन सुखो की सौगातों से महका दिया... यूँ जीवन मीठा और प्यारा बना दिया..."*

———————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कोई भी व्यर्थ बातें ना सुननी हैं ना सुनानी हैं*"

➳ _ ➳ अविनाशी ज्ञान रत्नों से मुझ आत्मा का श्रृंगार करने वाले ज्ञान सागर *अपने प्यारे शिव प्रीतम से मिलने की जैसे ही मन में इच्छा जागृत होती है। वैसे ही मैं आत्मा सजनी ज्ञान रत्नों का सोलह श्रृंगार कर चल पड़ती हूँ ज्ञान के अखुट खजानो के सौदागर अपने शिव प्रीतम के पास*। उनके साथ अपने प्यार की रीत निभाने के लिए देह और देह के साथ जुड़े सर्व संबंधों को तोड़, निर्बंधन बन, ज्ञान की पालकी में बैठ मैं आत्मा मन बुद्धि की यात्रा करते हुए अब जा रही हूं उनके पास।

➳ _ ➳ उनका प्यार मुझे अपनी ओर खींच रहा है और उनके प्रेम की डोर में बंधी मैं बरबस उनकी ओर खिंचती चली जा रही हूँ। *उनके प्यार में अपनी सुध-बुध खो चुकी मैं आत्मा सजनी सेकंड में इस साकार वतन और सूक्ष्म वतन को पार कर पहुंच जाती हूं परमधाम अपने शिव साजन के पास*। ऐसा लग रहा है जैसे वह अपनी किरणों रूपी बाहें फैलाए मेरा ही इंतजार कर रहे हैं। उनके प्यार की किरणों रूपी बाहों में मैं समा जाती हूं। उनके निस्वार्थ और निश्छल प्यार से स्वयं को भरपूर कर, तृप्त होकर मैं आ जाती हूँ सूक्ष्म लोक।

➳ _ ➳ लाइट का फरिश्ता स्वरूप धारण कर मैं फ़रिशता पहुंच जाता हूं अव्यक्त बापदादा के सामने। अव्यक्त बापदादा की आवाज मेरे कानों में स्पष्ट सुनाई दे रही है। *बाबा कह रहे हैं, हे आत्मा सजनी आओ:- "ज्ञान रत्नों का श्रृंगार करने के लिए मेरे पास आओ"।* बाप दादा की आवाज सुनकर मैं फ़रिशता उनके पास पहुंचता हूं। बाबा अपने पास बिठाकर बड़ी प्यार भरी नजरों से मुझे निहारने लगते हैं और अपनी सर्व शक्तियों रूपी रंग बिरंगी किरणों से मुझे भरपूर करने लगते हैं।

➳ _ ➳ सर्वशक्तियों से मुझे भरपूर करके बाबा अब मुझे एक बहुत बड़े हॉल के पास ले आते हैं। जिसमें अमूल्य हीरे जवाहरात, मोती, रत्न आदि बिखरे पड़े हैं। किंतु उस पर कोई भी ताला चाबी नहीं है। उनकी चमक और सुंदरता को देखकर मैं आकर्षित होकर उस हॉल के बिल्कुल नजदीक पहुंच जाता हूं। *बाबा मुझे उस हॉल के अंदर ले जाते हैं और मुझसे कहते हैं:- "ये अविनाशी ज्ञान रत्न है। इन अविनाशी रत्नों का ही आपको श्रृंगार करना है"।* कितना लंबा समय अपने अविनाशी साथी से अलग रहे तो श्रंगार करना ही भूल गए.

अविनाशी खजानों से भी वंचित हो गए। किंतु अब बहुत काल के बाद जो सुंदर मेला हुआ है तो इस मेले से सेकेंड भी वंचित नहीं रहना।

➳ _ ➳ यह कहकर बाबा उन ज्ञान रत्नों से मुझे श्रृंगारने लगते हैं। *मेरे गले मे दिव्य गुणों का हार और हाथों में मर्यादाओं के कंगन पहना कर बाबा मुझे सर्व ख़ज़ानों से भरपूर करने लगते है*। सुख, शांति, पवित्रता, शक्ति और गुणों से अब मैं फ़रिशता स्वयं को भरपूर अनुभव कर रहा हूँ। बाबा ने मुझे ज्ञान रत्नों के खजानों से मालामाल करके सम्पत्तिवान बना दिया है। सर्वगुणों और सर्वशक्तियों के श्रृंगार से सजा मेरा यह रूप देख कर बाबा खुशी से फूले नही समा रहे। बाबा जो मुझ से चाहते हैं, बाबा की उस आश को मैं आत्मा सजनी बाबा के नयनो में स्पष्ट देख रही हूं।

➳ _ ➳ मन ही मन अपने शिव प्रीतम से मैं वादा करती हूँ कि ज्ञान रत्नों के श्रृंगार से अब मैं आत्मा सदा सजी हुई रहूँगी और मुख से सदैव ज्ञान रत्न ही निकालूंगी। *अपने शिव साथी से यह वादा करके अपनी फ़रिशता ड्रेस को उतार अब धीरे-धीरे मैं आत्मा वापिस इस देह में अवतरित हो गयी हूँ*। अब मैं बाबा से मिले सर्व ख़ज़ानों से स्वयं को सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ। जैसे मेरे अविनाशी साजन ने मुझ आत्मा को गुणों और शक्तियों के गहनों से सजाया है वैसे ही मैं आत्मा भी वरदानीमूर्त बन अब अपने सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को अपने मुख से ज्ञान रत्नों का दान दे कर उन्हें भी परमात्म स्नेह और शक्तियों का अनुभव करवा रही हूं।

———————————————————

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं संगमयुग का महत्व जान परमात्म दुआओं से झोली भरने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मायाजीत आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आज्ञाकारी आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा बाप की वा परिवार की दुआओं की पात्र हूँ ।*
✺ *मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *रिबिन काटना, नारियल तोड़ना कोई भी सेवा शुरू करते हो, चाहे देश में, चाहे विदेश में बापदादा यही कहते हैं कि पहले एकमत, एक बल, एक भरोसा और एकता - साथियों में, सेवा में, वायुमण्डल में हो।* जैसे नारियल तोड़कर उद्घाटन करते हो, रिबनकाटकर उद्घाटन करते हो, तो पहले इन चार बातों की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो। यह पानी धरनी में डालो। *जो भी कार्य की धरनी है, उसमें पहले यह नारियल का पानी डालो फिर देखो सफलता कितनी होती है।* नहीं तो कोई-न -कोई विघ्न जरूर आता है। *सेवा सब करते हो लेकिन नम्बर बापदादा के पास रजिस्टर में नोट उसका होता है जो निर्विघ्न सेवाधारी है।* बापदादा के पास ऐसे सेवाधारियों की लिस्ट है. लेकिन अभी बहत थोडी है लम्बी नहीं हई है. भाषण

करने वालों की लिस्ट भी आपके पास लम्बी है, लेकिन *बापदादा उसको भाषण करने वाला कहता है जो पहले भासना दे, फिर भाषण करे।* भाषण तो आजकल स्कूल कालेज के लड़के, लड़कियां बहुत अच्छा करते हैं, तालियां बजती रहती हैं। लेकिन *बापदादा के पास लिस्ट वह है जो निर्विघ्न सबकी प्रसन्नता, सन्तुष्टता वाले हों।*

✺ *ड्रिल :- "निर्विघ्न सेवाधारी बनने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस सृष्टि रंग मंच अपना पार्ट बजाने के लिए अवतरित हुई हूँ... *मैं अपने अनादि स्वरूप में... बिन्दु रूप में स्थित होकर मन बुद्धि रूपी विमान से पहुंच जाती हूँ... अपने मूलवतन में प्यारे शिव बाबा से सम्मुख मिलन मिलाने के लिए...* मेरे इस वतन में चारों तरफ लाल प्रकाश की आभा फैली हुई है... इस आभा में मैं आत्मा असीम शांति का... शक्ति का अनुभव कर रही हूँ... मैं आत्मा बिन्दु रूप में... बिन्दु स्वरूप शिव बाबा के सम्मुख विराजमान हूँ... *महाज्योति बिन्दु स्वरूप शिव बाबा से मुझ आत्मा पर शक्तिशाली रंग-बिरंगी किरणों की बरसात हो रही है... जिससे मैं शक्तिशाली बन रही हूँ... विघ्न विनाशक बन रही हूँ...* बाबा ने मुझ आत्मा में अपनी सारी शक्ति भर दी है... मेरे सारे विघ्न दूर कर दिए हैं... अब मैं आत्मा विघ्न विनाशक के रूप में... अपने फरिश्ता स्वरूप का चोला धारण कर... वापस अपने सृष्टि रंग मंच पर पहुंच जाती हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस साकारी दुनिया में आत्म अभिमानी होकर रहती हूँ... और मुझ आत्मा के सामने जो भी देहधारी आते हैं उन्हें भी आत्मा रूप में ही देखती हूँ... *यह सब संस्कार मेरा नैचुरल बन गया है... इसके लिए मुझे मेहनत नहीं करनी पड़ती है...* मैं आत्मा बाबा की दी गयी शिक्षाओं और शक्तियों को प्रैक्टिकल में इस साकारी दुनिया में यूज कर रही हूँ... जब भी मैं आत्मा किसी सेवा के लिए जाती हूँ तो सबसे पहले बाबा की याद का रिबिन काटती हूँ... बाबा से प्राप्त ज्ञान का और शक्तियों का नारियल तोड़ती हूँ... जिससे हर सेवा निर्विघ्न संपन्न होती जा रही है...

➳ ➳ मैं असर नाशिनी अष्ट शक्तिधारी दर्गा बन देश में... विदेश में फैले

पांच विकारों के असुरों का नाश कर रही हूँ... विश्व की विकारों से ग्रसित आत्माओं को मुक्त करा रही हूँ... मैं आत्मा सेवा में अपनी मत और परमत मिक्स ना करके सिर्फ एक की मत ईश्वरीय मत पर चलती हूँ... मैं आत्मा एक परमात्म बल के भरोसे अपनी सेवा कर रही हूँ... अगर मुझ आत्मा को कभी भी सहायता की जरूरत होती है... तो निमित्त ब्राह्मण *भाई - बहन को एक साथ एकता के सूत्र में बांधकर... सबके विचारों का सम्मान करते हुए सहयोग ले आगे बढ़ रही हूँ... जिससे सेवा में वायुमंडल खुशनुमा बन रहा है... और सेवा निर्विघ्न सफल हो रही है...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा आत्म-अभिमानी स्थिति में स्थित होकर और एक की लगन में मगन होकर सेवा कर रही हूँ... जिससे हर आत्मा सन्तुष्ट और प्रसन्न होकर जा रही है... मैं आत्मा संतुष्टमणि हूँ... परमात्मा को प्राप्त कर मैं संतुष्ट हो गयी हूँ... और इस संतुष्टता का एहसास सारे विश्व की आत्माओं को करवा रही हूँ... *सब आत्मायें मेरी सेवा से प्रसन्न और सुख का अनुभव कर रही हूँ... मैं निर्विघ्न सेवाधारी हूँ...* मेरी हर सेवा बाबा के साथ से निर्विघ्न संपन्न हो रही है... मुझ आत्मा का नाम बाबा की उस डायरी की लिस्ट में है जिसमें निर्विघ्न सेवाधारियों का नाम लिखा है... बाबा ने मुझे निर्विघ्न भव का वरदान दिया है... *मेरा हर सेवा स्थान निर्विघ्न हो गया है...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा एक बड़े से हाॅल में स्टेज पर खड़ी हूँ... मेरे हाथ में माइक है... मैं आत्मा बाबा के नए बच्चों को बाबा का परिचय देने के लिए यहाँ उपस्थित हूँ... *बाबा के अविनाशी ज्ञान पर भाषण देने से पहले... मैं अपने टीचर... सद्गुरु शिवबाबा का आह्वान करती हूँ... मेरे परम सद्गुरु मेरे पास आओ और आकर अपने सिकीलधे बच्चों को सच्चे ज्ञान से भरपूर करो...* बाबा शिक्षक बन मेरे पास आकर खड़े हो जाते हैं... *बाबा मुझ आत्मा को निमित्त बना कर... अपने प्रेम और सुख की भासना दे रहे हैं...* हाॅल का सारा माहोल शांति से भरपूर हो गया है... मैं आत्मा निमित्त बन कर बाबा का सच्चा और अविनाशी नॉलेज हाल में उपस्थित सारी आत्माओं को दे रही हूँ... *इस परमात्म ज्ञान को सुनकर हर आत्मा तृप्त और संतुष्ट हो रही है...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔